ई 4-2-1967 ओम शान्ती प्रातःक्लास

सभी कहानी बच्चे, जो सभी से ऊच तें ऊच प्यारे तें प्यारा बाप है उनकी याद मैं बैठे है। यह तुम बच्चे ही जानते हो शिव बाबा जिनकी जयन्ती भी मनाई जाती है भारत मैं, उनकी यादमें हम बैठे है। वो बाप ही स्वर्ग का रचता है। हर 5000 वर्ष बाद आकर भारत को नर्कवासी से अथवा पतित भ्रष्टाचारी से पावन श्रेष्टाचारी अथवा आसुरी सम्प्रदाय सें दैवी सम्प्रदाय बनाते है। भारतवासी यों को नर्कवासियों सें स्वर्गवासी बना रहे है। ऐसे नही कि सिर्फ भारतको नर्क वासी कहेंगे। नही सारी दुनिया नर्कवासी है। सारी दुनियाँ पर रावण राज्य है। रावण ही नर्कवासी बनाते है। और जिनको भारतवासी राम भी कहते है परन्तु यथार्थ रीती नां जाननें कारण राम त्रेता वाला समझलेते है। वास्तव मैं उनकी तो बात ही नही। यथा कोई राम सीता का राज्य हो नही सकता। पत्थर बुद्धी होनें कारण कुछ भी समझते नही। बाप ही आकर बच्चों को समझाते है। अब सारी दुनियाँ को कैसे समझाया जावे। अखबार वालें भी इन बातों को नही समझते। बाबा नें देहली वालों को लिखा है कि प्रेस कांफेन्स बुलाओ। गवर्मेन्ट की अपनी खास प्रेस होती है। उनको कहा ही जाता है सरकार का मुह(मुख) समझो रखाया जो कुछ कहना होगा तो उनके खास पेपर है। वो जो भी लिखेंगे तो समझेंगे यह गवर्मेन्ट का डायरेक्शन है। अब तुम पाण्डव गवर्मेन्ट की तो कोई प्रेस है नही। यह है गुप्त गवर्मेन्ट। और यह है डबल अहिंसक। कौरव गवर्मेन्ट और पाण्डव गवर्मेन्ट दो है नां। सतयुग मैं तो एक ही गवर्मेन्ट होती है। तो अब यह पाण्डव गवर्मेन्ट है नई। वो तो एक ही कांग्रेस गवर्मेन्ट है। जब कांग्रेस गवर्मेन्ट शुरू हुई है तो पाण्डव गवर्मेन्ट भी शुरू हुई है। क्यों कि यह प्रजा का प्रजा पर राज्य बेकायदे है। बाप आकर समझाते है भारतवासियों को तो कुछ भी पता नही है। कल शिव जयन्ती मनाते है परन्तु जानते कुछ नही है। उनको तो कण-कण भित्तर, ठिक्कर मै ठोक दिया है। तो अब बाप डायरेक्शन देते है कि प्रेस कान्फ्रेंस को बुलाओ। देहली मै तो जरूर बुलाओ। तुम्हारी गवर्मेन्ट को तो प्रेस है नही। सत युग मैं लक्ष्मी नारायण का राज्य था तो कोई प्रेस आद नही थी। अब प्रेस आवाज करते है तो सबके कान मै आवाज जाता है। तो उनको समझाना चाहिये। इनकी स्पीचिज भी होती है। वहां की रिपोर्टस भी अखबार मै डालते है। तो उनको यह समझाना चाहिये कि हम एक शिव बाबा की ही महिमा करते है। त्रिमूर्ती शिव जयन्ती ही वंर्थ डायमन है। बाकी जो भी किसी की जयन्ती मनाई जाती है वो सब है वैथ अपेनी। क्यों कि सर्व का दुख हर्ता सुख कर्ता तो एक ही है। भारतमें गाते भी है दुःख मैं सिमरण सबकोई करे, सुख मैं करे नां कोई। किसका सिमरण? बाप का। क्यों कि बाप नें ही दुख सें छुड़ाये और सुख कीराजधानी स्थापन की है। बुलाते भी है हे पतित पावन आओ। आकर राम राज्य स्थापन करो। तो ऐसे बाप की जयन्ती कैसे धाम धूम सें मनानी चाहिये। क्यों नही गजेटिड हालीडे करना चाहिये। मनुष्यों को जगाना पड़ता है। जगाना का भी अकल बाप सिखाते है। शिव बाबा ही भारत को स्वर्ग बनाते है रावण नें नर्क बनाया है। स्वर्ग मैं इन देवताओं का राज्य था। अब बाप स्वर्ग की स्थापना करनें राजयोग सिखा रहे है। कृष्ण राज योग नही सिखाते। शिव बाबा कहते है तुम भारत वासी सतोप्रधान स्वर्ग वासी थे। अब तमोप्रधान बने हो। फिर मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे और सतोप्रधान बन जावेंगे। यह अक्षर थोडे है। शिव परमपिता परमात्मा आते है स्वर्ग की स्थापना करनें। तो नर्क का विनाश होता है। कोई मरते है तो भी कहते है स्वर्ग वासी हुआ। तो अभी तो है ही नर्क तो पुनर्जन्म भी जरूर नर्क मै ही होगा। तो प्रेस वालों को अच्छी रीती समझाना चाहिये। इनको कुछ खिलाओ पिलाओ तो राजी हो जाते है। बन्दरों को भुगड़ा खिलाते है तो हाथ सें प्यार सें उठा कर खाते है। और वैसे तो काटनें को आवेंगे। परन्तु उनका भी कोई दोष नही है। ड्रामा मैं ही नूंध है। बच्चों को दैवी गुण धारण करनें लिये भी रोज समझाते रहते है। क्यों कि तुम तो देवता बनते हो नां। राजाओं की चलन कितनी रायल होती है। उनके बच्चे स्कूल मैं कैसे रायलटी सें चलते होंगें। और तुम तो शिव बाबा की सन्तान हो। ब्रह्मा के बच्चे कहलाते हो यह

वेष भी तुम जानते हो इस देवता थे। जो फिर मनुष्य बने है। देवताओंर मनुष्य में फर्क क्या है। देवतायें पवित्र है मनुष्य अपवित्र है। है तो वो भी मनुष्य। 6 फुट से जास्ती कोई 10, 12फुट के नही होते है। नां कोई की 8, 10 भुजायें होती है। बाकी बाप आकर दैवी गुण धारन करा कर मनुष्य से देवता बनाते है। विचारे शिव की पूजा करते है परन्तु समझते कुछ भी नही। जयन्ती जिसकी मनाते है तो उसकी बायोग्राफी भी जरूर होती है। गांधी नेहरू आद की कुल बायोग्राफी निकलते है। अब शिव बाबा की बायोग्राफी तो है नही। शिव बाबा खुद बैठ बताते है कि मै क्या करता हूं। तुम महिमा भी गाते हो शिवाय नमः।... शिव को ब्रह्मा तो नही कहेंगे। ब्रह्मा तो नीचे तबके में होते है। तबका होते है नां। मूल वतन सुक्ष्म वतन, स्थूल वतन, यह टियर (तिमंजला) है यह है बेहद के फ्लैटस। ऊंच ते ऊंच फ्लैट में रहते है शिव बाबा और सब आत्मायें। सैकिंड फलौर में है सुक्ष्म वतन। ब्रह्मा विष्णु शंकर रहते है। और यह है थर्ड। इसको ग्राऊन्ड फलौर कहेंगें। बस यही तीन फलौर है। और कोई फलौर होता नही। फर्स्ट फलौर में सूर्य चांद नही रहते। वो है ब्रह्म महातत्व जहां आत्मायें रहती है। यह बेहद की बाते है। इन बातों को दुनियां वाले नही समझते। वो तो ब्रह्म को ही भगवान कह देते है। यह बाप बैठ समझाते है। मूल वतन, सुक्ष्म वतन, और यह स्थूल वतन। सुक्ष्म वतन में है ब्रह्मा विष्णु शंकर। कहानी सारी ब्रह्मा और विष्णु की ही है। ब्रह्मा सो विष्णु विष्णु सो ब्रह्मा। विष्णु राज्य करके 84जन्मों बाद फिर आकर ब्रह्मा बनते है। यह ब्रह्मा नाम भी इन पर बाप रखते है। चित्रों में भी तुम दिखाते हो नीचे ब्रह्मा खड़े है। अन्तिम 84 वे जन्म में। ब्रह्मा सो विष्णु, (ल न.) बनते है। विष्णु सो फिर ब्रह्मा। सारा इनका ही पार्ट है। तो इस एक ही दुनियां में तीन फलैटस है बेहद के। और कुछ नीचे है नही। नीचे तो पानी है। यह भी बना बनाया खेल है। समुद्र का पानी खारा। और धरती को खोदो तो पानी मीठा निकलेगा। समुद्र के नीचे भी फिर पानी मीठा निकलेगा। समुद्र के बाजू में कुआं खोदते है तो फिर पानी मीठा निकलता है। आज कल साईंस बल से खारे पानी को भी मीठा बना देते है। परन्तु कितनी मेहनत कितना खर्चा लगता है। बादल पानी खींचते हैं तो उसमें कोई खर्चा आद नही होता है नां। यह तो भारतवासी शिव बाबा को पत्थर ठिक्कर में कह कर कितनी गाली देते है। कच्छ अवतार मच्छ अवतार। मनुष्यों को तो ऐसे गाली नही देते मनुष्यों के लिये 84लाख जन्म कहना शुरू किया है। बाप को तो और ही पत्थर ठिक्कर में कह दिया है। रावण ने कितना तुच्छ बुद्धी बनाया है। भारत इतना शाहुकार था। ल न. का राज्य था इनको राज्य कैसे मिला यह कोई नही जानते है। गीता में भी है बाप राजयोग सिखाते है तो उस समय महाभारत लड़ाई भी थी। विनाश भी दिखाया है। फिर दिखाते है चार पाण्डव बचे वो फिर पहाड़ पर मर गये। बस। एक तरफ दिखाते है कि देवताओं की जीत हुई। ऐसे मर गये। देवताओं को सतयुग में भी दिखाते है फिर कहते है चार पाण्डव पहाडों पर गल मरे। यह तो जैसे कहानी बनाई है। यह सब समझने की बाते है। तुम्हारे में भी नम्बर वार धारना करते है। बाप कहते है हियर नो ईविल, कई फिर समझते है ज्ञान नां सुनो, नां सुनाओ। हम बाप को याद नही करेंगे। ज्ञान नही है तो फिर ईविल ही बाते करते है। इसलिये पद भी बहुत कम पाते है। हम कहेंगे तुम्हारा पुरूषार्थ ही ऐसा है। तो अब बच्चों को शिव जयन्ती की बात को जोर शोर से उठाना है। तुमको कोई भूख हड़ताल वा लड़ाई झगड़ा आद तो नही करना है। समझाना है तुम और तो सबकी जयन्तियां मनाते हो, छुटी करते हो। यह तो शिव बाबा नां कि सिर्फ भारत के बल्कि सारी सृष्टी के धर्मों के सब मनुष्य मात्र का सदगती दाता लिबरेटर गाईड है। तो उनकी तो बहुत अच्छी रीत मनानी चाहिये नां। बाप तो श्रीमत देते रहते है ऐसे-2 करो। इसमें तुम्हारा बहुत नाम होगा। शिव बाबा कब आते है यह भी किसीको पता नही है। अभी अन्धों की लाठी तुम बनते हो। सब बिलकुल अन्धे पत्थर बुधी है। अपने बाप को ही नही जानते। फादर कहते है परन्तु उनको जानते नही। जो आते भी भारत

में ही है। 5000वर्षों की बात को लाखों वर्ष लगा दिये है बाप आकर रचता और रचना के आद मध्य अन्त का राज बताते है। 84जन्मों की सीढ़ी उतरनी फिर चढ़नी है। चढ़ती कला ईविंग में गाया जाता है। यह भी बाप ने समझाया है जो -2 भी सैकिंड पास होता है कल्प पहले मुआफिक। एक सैकिंड नो मिले दूसरे से। ड्रामा की सीन रिपीट होती रहती है। ड्रामा की फिल्म रिपीट होती है फिर उसको ट्रान्सफर करते है। तो देखते हो बाप भी इस बेहद की फिल्म को कैसे ट्रान्सफर करते है। अभी तुम समझते हो। तुमको ऐसे बाप को अच्छी रीति याद करना है। याद नही करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे ही नही। विकर्म जो किये है उनको भस्म करना है, तो फिर और विकर्म तो ऐंड नही होने चाहिये नां। अगर ऐंड होते जावेंगे तो सौ गुने बन जावेंगे। तुम बच्चों का नाम बहुत निकलेगा। तुम सिद्ध करते हो। 3। जयन्ती। रचता ख्वुद ही अपना और रचना का नालेज देंगे। मनुष्य मात्र तो नां रचता को नां रचना को जानते है। तो जरूर रचता ही नालेज देंगे। हम पुरूषार्थ दवारा यह सब कुछ समझ रहे है परन्तु वो पत्थर बुद्धी ऐसे है जो कुछ भी समझते नही है। जिन्होंने कल्प पहले समझा और वर्सा लिया है वो ही अब भी समझेंगे। वास्तव में आदी सनातन है दैवी देवता धर्म। हिन्दु कोई धर्म नही है। देवतायें है पवित्र। रावण राज्य में अपवित्र बनने कारण फिर अपने आप को हिन्दु कहलाते है। देवता कहला नही सकते है। वास्तव में हिन्दु कोई धर्म नही है। बाप आकर ब्राहम्ण क्षत्री और देवता धर्म की स्थापना करते है। शिव बाबा ने ही ब्राहम्ण धर्म स्थापन किया है। ब्राहम्ण ही सूर्य वंशी चन्द्रवंशी बनते है। इनकी है भी गीता। तुम कहते हो हम बाप से राज योग सीख रहे है। फिर भी समझते थोड़ेई है। ब्राहम्ण निकले और खलास। कितने पत्थर बुद्धी है। बाप सब बातें समझाते रहते है। देहली वालों के लिये भी समझाया। बाप तो बहुत लवली है। सबसे मीठा है। और तो सब पुरूषार्थी है। वो तो सम्पूर्ण है नां। उनको कितना याद करना चाहिये। वाह:- बाबा हमको कितना ऊंचा वर्सा आकर देते हो। हमारा कितना ऊंचा नसीब है। नाटक में जिनका पार्ट होता है वो चलते फिरते क्या अपने पार्ट को नही समझते होंगे। वो तो सारे ड्रामा को जानते है। फलाने का यह पार्ट है उनका यह पार्ट है। वो है हद का ड्रामा। यह है बेहद का। तुम अभी ब्रहमा मुख वंशावली हो। श्रीमत पर भारत को सिखाते हो कि शिव बाबा को याद करो। तो विकर्म भस्म होंगे। जो इस धर्म का होगा उनको झट टच होगा। जिस प्रकार ज्ञान लिया होगा उसी प्रकार आ कर लेंगे। अन्दर में भी फखुर रहना चाहिये। ड्रामा में पुरूषार्थ तो करना है। मुख से कब ऐसे कुवचन नां निकले। बेहद का बाप क्या कहेगा। जिनका राइट हैंड फिर धर्मराज है। फिर ट्रिब्युनल में फिर सजायें खावेंगे। ब्राहम्ण बच्चों की ही बात है। कोई तो फर्स्ट क्लास लिखते है हमसे यह भूल हुई। बाबा के पास समाचार तो सब आते है नां। बहुत आसान है किसीको समझाना। बाबा हर 5000वर्ष बाद भारत को आकर स्वर्ग बनाते है। रावण ने नर्क बनाया है। अब बाप कहते है योग बल की यात्रा से तुम सतोप्रधान बन सकते हो। लिखने करने को भी बहुत युक्ती चाहिये। संजय लिखने की युक्ति जानते है। मुख्य है वो। उनका अपना फर्ज अदा ही करना है। गवर्नमेन्ट को सुजाग करना है। यह सुजाग हो जावें तो फिर विहंग मार्ग की सर्विस हो जावें। परन्तु शायद अभी देरी है तो ही इतना भी नही समझते है। नही तो बाबा कहीं जावें तो पता नही क्या कर देवें। एक दिन होगा जो नीचे आबू रोड से लेकर यहां तक सारी लाईन में खड़े होंगे। परन्तु अभी देरी है। बड़े-2 आदमी कहीं बाहर निकलते है तो कितना भभका हो जाता है। कितने जाते है उनको देखने के लिये। अभी तुमको थोड़ेई दिल होगी किसीको देखने की। मनुष्य तो धक्के खाते रहते है।

ब्राहम्ण कुल भूषण नूरे रत्न स्वदर्शन चक्रधारी मोस्ट लवली सिकिलधे बच्चों को बेहद के बाप सतयुगी दुनिया के रचता, नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाने वाले, ड्रामा की आद मध्य अन्त की नालेज देने वाले, बन्दरों को मन्दिर लायक बनाने वाले मात-पिता बेहद के बाप दादा का याद प्यार गुड़ मार्निंग नमस्ते